जीवनसाथी का चयन कैसा व कैसे हो ?

हमारे देश में दाम्पत्य संबंध का अर्थ बहुत गहरा और व्यापक है, शादी यानि एक नये संसार में दस्तक ख़ासकर लड़कियों के लिये एक नया माहौल, नये लोग ।

शादी का रिश्ता, केवल सात फेरों या सात वचन लेने भर का नहीं, इस रिश्ते में कितनी ही अनकही, अबोली जिम्मेदारियां भी साथ आती है । जीवन साथी ही नहीं ससुराल से जुड़े हर पहलू की समझ रखना हिस्से में आ जाती है ।

विवाह एक संस्कार है जो दो दिलों को एक करता है, साथ ही दो परिवारों और कितने ही अन्य लोगों को रिश्तों की कड़ी में पिरोता है । हालांकि जिंदगी के सबसे हसीन पलों में से एक है शादी । कितने सपने होते है कुंआरे नयनों में, भावनाओं का उछाल, बेहद विश्वास, निश्छलता, कुछ अल्हड़ता ।

वैवाहिक संबंध मिले जुले अनुभवों और भावनाओं का संगम है इसमे जहां सुख दुख की धूप छांव है तो मिलन विछोह की कसक भी है, शादी संपूर्ण खट्टा नहीं, संपूर्ण मीठा नहीं । कुछ खट्टा, कुछ मीठा, कुछ चटपटा, कुछ कसैला भी है । यदि हम इसे केवल सुख की सेज मानकर या केवल कांटो का ताज मानकर चले तो दोनों ही गलत है, जहां इसमें शीतल बयार है तो तेज आंधियां और लू के थपेड़े भी है ।

प्रेम विवाह हो या परम्परागत विवाह या किसी आधुनिक पद्धति से किया गया विवाह अर्थात् लिव इन में रहने के बाद सब गुप चुप तरीके से किया गया या भागकर सजातीय या अंर्तजातीय लड़के और लड़की की पसंद और रुचि बहुत मायने रखती है ।

जब हम परिवार की इच्छा के विरुद्ध जाकर किसी दूसरी जाति या किसी दूसरे धर्म में अपना भविष्य देखते है तब बहुत सजगता और सतर्कता की आवश्यकता होती है क्योंकि तब आपका खानपान, आपका रहन सहन, आपके संस्कार, रीतियां, आपके आराध्य जिनसे आपका लगाव शैशवकाल से लेकर जवानी तक रहा, वह पूरा का पूरा एक झटके में बदल जाता है और यह चयन केवल आपका और आपका ही होता है । यदि गलत होता है तो इसमें भूल के लिये केवल दण्ड है, सुधार की कोई गुजाइंश नहीं बचती, ना ही आपके अपने साथ होते है । कुछ अपवादों को यदि छोड़ दें तो हर माता पिता की यही दिली इच्छा होती है कि वह अपने बच्चों को अच्छे से अच्छा जीवन साथी अपनी ही संस्कृति, संस्कारों और धार्मिक आस्थाओं वाला ढूँढ़ने में मदद करें ।

प्रायः युवा अपनी जवानी में ऐसी भूल कर जाते है कि उससे जिंदगी का सारा नक्शा ही बदल जाता है पर किसी का सही कदम जिंदगी का अक़्स संवार भी देता है ।

''जीवन में कुछ चीज़े कोमल तंतुओ से बंधी रहने पर सुंदरता को पाती है, जब उन्हें अधिकार की लोह श्रृंखला से बांधने का प्रयास किया जाता है तो वह बिखर जाती है और विवाह में ये बात शत प्रतिशत लागू होती है । यदि प्रेम विवाह हो रहा है तब लड़का और लड़की दोनों ही सपनों की एक अलग दुनिया, टीवी सीरियल, फिल्मों की संतरंगी कहानियों में विचरण कर रहे होते है ।

वे इस तथ्य को भूल जाते है कि जिंदगी टीवी का धारावाहिक नहीं, दाम्पत्य में केवल लव स्टोरी ही चलने वाली नहीं है । जीवन का ये गूढ़ सत्य है कि - **''मिल गया तो माटी जैसा, खो गया तो सोने जैसा''** । विवाह संबंध, प्रेम भावना, मित्र भावना के अतिरिक्त कुछ अन्य अस्पृश्य अनुभूतियों की जिम्मेदारियों का समूह भी है । भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिए पहले से ही स्वयं को तैयार करना पड़ता है ।

किसी को केवल जानने मात्र से ज्यादा काम बनते नहीं क्योंकि जानना आसान है वरन् पहचानना मुश्किल है, जब दैनिक जीवन में अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन पूरे लगन, अनुशासन के साथ परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की कसौटी पर खरा उतर कर करना होता है तब सही पहचान होती है, तब हमारे अंदर से हूक नहीं उठनी चाहिये । कई बार हम मीठे मीठे प्रलोभनों में फंसकर किसी के दिखावे में उलझकर, केवल अपने भावनाओं के ज्वर में सिमटकर कुछ ऐसे कदम उठा लेते है, जिसके बाद हमारे लिए वापसी के सारे रास्ते बंद हो जाते है । हमारे परिजन केवल हमें बेबस देखते रहते है ।

विशेषकर लड़कियों से कहूंगी - पत्नी बनना एक चुनौती है, संघर्ष है, पत्नी बनकर किसी के साथ रहना, उसे प्यार करना, जटिल व्यक्तित्व एवं विचार धारा के साथ उसके संपर्णू रीति रिवाज, धार्मिक आस्थायें, खान पान और उससे जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को जानकर उनके अनुरुप खुद को सिद्ध करना होता है जो अपने विपरीत हो तो बहुत मुश्किल है ।

पत्नी एक परख पट्टिका है एक ऐसी कसौटी जिसकी सहायता से पुरुष अपने विचार, आशा, सपने, महत्वकांक्षाये, समस्याएं, अंर्तद्वंद्व इत्यादि से निपटता है ।

विवाह अपने अस्तित्व की पहचान खोना नहीं । अपने साथी से साहस प्राप्त कर हम दुर्गम तथा असाध्य कार्यों को पूर्ण करने की क्षमता विकसित कर सकते है । इसका मतलब यह नहीं कि दोनों के शौक, दोनों के विचार एक होना चाहिये । सिक्के के दोनों तरफ का चित्र एक दूसरे से बिल्कुल मेल नहीं खाता, फिर भी दोनों में बुनियादी एकता होने की वजह से दोनों जीवनभर एक रहते है, आवश्यकता इस बात की नहीं कि दोनों के सब शौक एक हो, सब विचारों में समानता हो वरन् आवश्यकता इस बात की है कि एक के शौक से दूसरे को चिढ़ ना हो, असहनीय ना हो ।

मान लीजिये ऐसे लड़के से शादी कर ली जिसके घर में रोज रोज मांस पकता है, रोज शराब और सिगरेट का सेवन खुले आम होता है और दूसरी तरफ दूसरे को केवल यह सोचकर ही उल्टियां आने लगे तो क्या वहां जीवन बिताया जा सकता है ? कई बार हम जान बूझकर इतनी असमानताओं में घुस जाते है कि जीवन दुरुह और कष्टप्रद साध्य हो जाता है । इंसान सब कुछ सहन कर सकता है लेकिन जन्म जन्मांतरो के जो संस्कार चले आ रहे है वह उसे निरंतर मथते रहते है जिनसे वह अलग नहीं हो पाता । ये भी सच है कि प्रथाएं और परम्पराएँ समय के साथ बनती है, उसमें सुधार होता है, बिगड़ती भी है, प्रगतिशीलता इस संसार की जरुरत है । इसी कारण हमारी प्रथाओं, परम्पराओं में समय समय पर संशोधन और परिमार्जन हो रहा है लेकिन जो हमें सुख, शांति और स्थायित्व दे उन्हें तो हमें मानना ही चाहिए ।

आपसे ! अपने विचार प्रकट करने का एक ही उद्देश्य है कि हर शादी करने वाले का जीवन रेशमी, मधुर और स्थायी हो इसी में बंधन की शोभा है, सुख है । सार्थकता है इसी में बंधन का आनंद है ।

शादी जीवन का वो पायदान है जहां आप अपने जीवन साथी का साथ पाकर खिल सके, पल्लवित हो सके, संवर सके, अपनी प्रतिभा को खुला आसमां दे सके । इसलिए एक दूसरे का हाथ थामने से पहले सारे पहलुओं पर अच्छे से विचार करें, परिजनों के अनुभवों का अवश्य लाभ उठाये, हम भारतीय संस्कृति के पुरोधा है यहां ''ये नहीं तो वो, वो नहीं तो कोई और'' नहीं चलता है । शादी के पहले इसके बिना एक पल भी नहीं जी सकता । शादी के बाद इसके साथ एक पल भी नहीं जी सकता । मान लो हमने अपनी भूल सुधार के लिए बंधन तोड़ भी दिया तो आप परिजनों से, समाज से वो सम्मान और आदर कभी नहीं पा सकते जिसके आप हक़दार है क्योंकि यह आपका स्वयं का निर्णय था -

कई बार जिंदगी में ऐसी स्थिति बन जाती है कि ''तुम्हारे आने से सिर्फ इतना फर्क़ आया जिंदगी में, पहले अकेले तन्हा थे, अब तुम्हारे साथ तन्हा हूँ'', ''जीवन के सफर में जहां बहारों के मेले है, वहीं गमों के रेले भी है ।'' जिंदगी को प्रीत प्रीत करने के लिए स्वच्छ हो, धवल हो, करनी कथनी पर अमल हो, प्रगति की चाह में, विवाह की राह में, स्वजनों को लेकर साथ बढ़े चलो बढ़े चलो । दाम्पत्य में जुड़ने वाले सभी का जीवन सरल, सुखद, आनंदित हो ।

- साधना जैन, आकाशवाणी, भोपाल

लघु कथा

एक पिता ने अपनी बेटी की सगाई की, लड़का बड़े अच्छे घर से था तो पिता बहुत खुश हुए। लड़के ओर लड़के के माता पिता का स्वभाव बड़ा अच्छा था तो पिता के सिर से बड़ा बोझ उतर गया।

एक दिन शादी से पहले लड़के वालो ने लड़की के पिता को भोजन पर बुलाया । पिता की तबीयत ठीक नहीं थी फिर भी वह ना न कह सके । लड़के वालो ने बड़े ही आदर सत्कार से उनका स्वागत किया । फिर लडकी के पिता के लिए चाय आई शुगर की वजह से लडकी के पिता को चीनी वाली चाय से दूर रहने को कहा गया था ।

लेकिन लडकी के होने वाली ससुराल घर में थे तो चुप रह कर चाय हाथ में ले ली । चाय की पहली चुस्की लेते ही वो चोक से गये, चाय में चीनी बिल्कुल ही नहीं थी और इलायची भी डली हुई थी। वो सोच में पड़ गये की ये लोग भी हमारी जैसी ही चाय पीते हैं । दोपहर में खाना खाया वो भी बिल्कुल उनके घर जैसा, दोपहर में आराम करने के लिए दो तकिये पतली चादर।

उठते ही सोंफ का पानी पीने को दिया गया। वहाँ से विदा लेते समय उनसे रहा नहीं गया तो पुछ बैठे मुझे क्या खाना हैं, क्या पीना हैं, मेरी सेहत के लिए क्या अच्छा हैं? ये परफेक्टली आपको कैसे पता है ? तो बेटी की सास ने धीरे से कहा कि कल रात को ही आपकी बेटी का फोन आ गया था और उसने कहा कि मेरे पापा का स्वभाव से बडे सरल हैं बोलेंगे कुछ नहीं, प्लीज अगर हो सके तो आप उनका ध्यान रखियेगा । पिता की आंखों मे वहीं पानी आ गया था । लडकी के पिता जब अपने घर पहुँचे तो घर के हाल में लगी अपनी स्वर्गवासी माँ के फोटो से हार निकाल दिया।

जब पत्नी ने पूछा कि ये क्या कर रहे हो?? तो लडकी का पिता बोले-मेरा ध्यान रखने वाली मेरी माँ इस घर से कहीं नहीं गयी हैं, बल्कि वो तो मेरी बेटी के रुप में इस घर में ही रहती हैं। और फिर पिता की आंखों से आंसू झलक गये ओर वो फफक कर रो पड़े। दुनिया में सब कहते हैं ना! कि बेटी हैं, एक दिन इस घर को छोड़कर चली जायेगी । मगर मैं दुनिया के सभी माँ-बाप से ये कहना चाहता हूँ कि बेटी कभी भी अपने माँ-बाप के घर से नहीं जाती । बल्कि वो हमेशा उनके दिल में रहती हैं। दुनिया की सभी बेटियाँ को मेरा सादर प्रमाण । **-अवनी जैन, पुणे**